ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

प्रताप सिंह डाभी 'हाकल' के विशेष संदर्भ में

वर्ष : 12 अंक : 21 अप्रैल, जून-2022

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

अनुक्रम

(काव्य सृष्टि)

1. प्रताप सिंह डाभी 'हाकल' की ग़ज़लें — **प्रताप सिंह डाभी 'हाकल'** — 05
2. डॉ. सतीन देसाई परवेज़ दीप्ति 'गुरु' द्वारा प्रताप सिंह डाभी 'हाकल' की अनुवादित ग़ज़लें — **डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'** — 12
3. प्रबीर गौरांग भट्ट ''शागिर्द'' की कविताएँ — 17
4. हाइकु - काव्य — **डॉ. मालती दुबे** — 21

(आलोचना)

5. हाकल की आत्मबयानी — **प्रताप सिंह डाभी 'हाकल'** — 22
6. हुंकार-ए-हाकल — **डॉ. सतीन देसाई परवेज़ 'दीप्ति गुरु'** — 25
7. उस आसमान पर है नजर मेरी... — **नीशिथ रंजन तिवारी** — 28
8. हमदर्दी नहीं हाथ चाहिए — **प्रताप सिंह डाभी 'हाकल'** — 29
9. व्हीलचेयर से पवनपावडी तक — **मोहन भाई बारोट** — 32
10. प्रबीर गौरांग भट्ट शागिर्द की नज्म ''ऊँची उड़ान'' का रसास्वादन — **सतीन देसाई परवेज़ 'दीप्ति गुरू'** — 33
11. पंडित सुरेश नीरव की ग़ज़ल 'रूह के रिश्ते' का आत्मदर्शन — **सतीन देसाई 'परवेज़' दीप्ति 'गुरू'** — 35
12. समाज सुधारक रैदास — **डॉ. दिलीप मेहरा** — 37
13. बुंदेलखंड परिवेश केंद्रित हिंदी उपन्यास 'फरिश्ते निकले' में चित्रित नारी संवेदनाएँ — **धर्मवीर सिंह** — 41
14. प्रदर्शन की भावना और 'मैडिरा मैंरुन' — **सतीश भाई ए. भोये** — 45
15. संस्मरण साहित्य के परिप्रेक्ष्य में काशीनाथ सिंह के 'याद हो कि न याद हो' का विहंगावलोकन — **पढियार उषाबेन नानसिंह** — 46
16. मध्यकालीन कुड़माली साहित्य में अलंकार विधान — **श्री सुभाष चन्द्र महतो** — 50
17. समकालीन हिंदी कविताओं में लोकतांत्रिक खोखली प्रणालियों का पर्दाफ़ाश — **डॉ. एन. टी. गामीत** — 54
18. समाजवाद के पुरोधा : डॉ. राममनोहर लोहिया — **डॉ. हसमुख परमार**
19. सूर्यबाला के बालसाहित्य में बच्चों की समस्याएं — **सालवे आशा गोविंदराव**
20. वृद्ध विमर्श और 'हंसा ताई' — **नीलम वाधवानी**
21. मैत्रेयी का 'अल्मा-फ्रेम' — **डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला**
22. कलम, कागज और कविता का मौन : डॉ. किशोर काबरा — **जयेन्द्र त्रिपाठी**
23. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में भारतीय संस्कृति — **इन्दिरा बी. वसावा**
24. डॉ. हरियश राय के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति — **शकुन्तला एल. पलास**
25. भारतेंदु हरिश्चंद्र : आधुनिक हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और स्त्री मुक्ति के प्रणेता — **डॉ. अनुपमा कुमारी**
26. मुक्तिबोध व राजकमल चौधरी : शिल्पगत तुलना — **परमार महेन्द्रकुमार फतेसिंह**
27. राजेश जोशी की कविता और मेहनतकश लोगों का संघर्ष — **डॉ. संजय रणखांबे**

(काव्य सृष्टि)

कुछ ऐसा खलता है- — **जिगर काछीआ**

(रिपोर्ट-1)

गुजरात यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग में राष्ट्रीय संगोष्ठी

(रिपोर्ट-2)

प्रो. दिलीप मेहरा को हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा आलोचना में प्रथम और कहानियों में द्वितीय पुरस्कार

यतीन देसाई जी को श्रद्धांजलि

आगामी अंक पण्डित सुरेश 'नीरव' जी के आधार पर

12

समाज सुधारक रैदास

❖ डॉ. दिलीप मेहरा

'ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिलई सबन कू अन्न।
छोटे बड़े सब सम बसें,रहे रविदास प्रसन्न।'

मध्यकालीन हिंदी काव्य को स्वर्ण युग के काव्य की संज्ञा दी जाती है। इस काल में दो प्रकार की भक्ति हो रही थी–सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति की दो शाखाएं थी– राम भक्तिकाव्य शाखा और कृष्ण भक्ति काव्य शाखा। निर्गुण भक्ति की दो शाखाएं थी– ज्ञान मार्गी शाखा और प्रेम मार्गी शाखा। ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों में कबीरदास, दादू,मलूक दास,रविदास, सीपा आदि प्रमुख हैं। प्रेम मार्गी शाखा के कवियों में जायसी आदि थे। ज्ञानमार्गी शाखा के कवि संत कहलाए। इन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना संबंधी काव्य की रचना की। प्रेममार्गी शाखा के कवि सूफी संप्रदाय के थे। इन्होंने प्रबन्ध रचनाएं और लोक कथाओं की सहायता से काव्य रचना की।

निर्गुण भक्ति के संत कवि अधिकांश दलित वर्ग के थे। वे संत कवि उपदेश, गुरु वंदना से संबंधित काव्य रचना करते थे। इनके भजन गेय होते थे। ग्रामीण जनता उनको ढोल, मंजीरे की सहायता से गाती थी। पूर्व उत्तर प्रदेश में इन संत कवियों के भजन बहुत लोकप्रिय है। निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने वाले कबीर, रैदास, दादू आदि लोक में नवजागरण उत्पन्न करते थे। वह गुरु भक्ति को सर्वाधिक महत्व देते थे। उनका मानना था कि गुरु ही तो ब्रह्म का ज्ञान कराता है, इसलिए गुरु का महत्व सर्वाधिक है। अतः कबीर ने कहा था–

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपणो, गोविंद दियो बताए।।

कबीर और रैदास ऐसे संत कवि है जो आज 600 साल के बाद भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने जो बातें 600 साल पहले कही हैं वह आज भी हमारे समाज में लागू होती हैं। दोनों संत कवि मानवीय संवेदना को उजागर करने वाले कवि हैं। कबीर की तरह रविदास जी भी प्रासंगिक कवि हैं।

जीवन वृत्त

रविदास का जन्म काशी के पास माण्डूर नामक गाँव में संवत 1500 में चमार परिवार में हुआ था। कुछ विद्वानों ने रविदास का जन्म संवत 1445 से संवत 1575 के बीच माना है। कहने का तात्पर्य यह है कि रैदास के जन्म के बारे में विद्वानों में एक मत नहीं है। रविदास के पिता का नाम रग्घू और माता का नाम घुरबिनिया था। घर के लोग काशी के निकट एक गांव में मरे हुए ढोरों की खाल का काम करते थे। रविदास शैशवावस्था से ही श्री राम और सीता की प्रतिमाएं बनाकर उनकी प्रार्थना गाया करते थे। पारिवारिक पेशे के प्रति वे ज्यादा खुश नहीं थे। अतः वे अपने घर के पिछवाड़े छप्पर बनाकर रहते थे। रैदास की पत्नी का नाम कोना था। वह भी धार्मिक प्रवृत्ति की थी। पति की सेवा करना, उनके कार्य में हाथ बटाना और भजन गाना उनका कार्य था। वे स्वभाव से सहृदया थी। रैदास जी की शिक्षा–दीक्षा नहीं हुई थी। उस समय उनकी जाति वालों को वेद आदि शास्त्र पढ़ने की अनुमति नहीं थी। रैदास ने सत्संग के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया था। रैदास के गुरु रामानंद थे। रामानंद ने भक्ति को सरल स्वरूप प्रदान किया था। उन्होंने निर्गुण और सगुण भक्ति का मार्ग सभी के लिए सुलभ बना दिया था। इतना ही नहीं रामानंद ने स्त्रियों के लिए भी भक्ति मार्ग प्रसस्त किया था। कहने का तात्पर्य यह है कि पुरुषों के समान स्त्रियों को भी शिष्यत्व प्रदान किया जाता था। रामानंद समाज के दलित वर्ग को उपर उठाना चाहते थे। वे उन्हें धार्मिक ग्रंथ पढ़ने का अधिकारी मानते थे। रविदास के भजन वे बड़ी रुचि के साथ सुनते थे। रविदास और कबीर गुरु भाई थे। वे दोनों आपस में बहुत स्नेह करते थे। जब दोनों मिलते तो गद्‌गद् हो जाते थे। दोनों गले से ऐसे मिलते कि प्रेमाश्रुओं से धरा गीली हो जाती थी। रैदास ने कबीर की प्रशंसा करते हुए कहा कि–